कविता

वो छोटा लड़का

हेलेन बक्ले

एक बार एक छोटा बच्चा स्कूल गया।
एक सुबह
टीचर ने कहा, "आज हम एक चित्र बनायेंगे"
"बढ़िया।" बच्चे ने सोचा।
उसे हर तरह का चित्र बनाना पसन्द था।
बाघों और शेरों का,
गायों और चूज़ों का,
रेलों और नावों का।
उसने अपना क्रेयॉन का डिब्बा निकाला
और चित्र बनाने लगा।

पर टीचर ने कहा, "ठहरो"
"अभी शुरू करने का वक़्त नहीं आया।"
और वह इन्तज़ार करती रही
जबतक सभी तैयार नहीं दिखने लगे।

"अब शुरू करते हैं" टीचर बोली,
"हम फूल बनायेंगे"
"बढ़िया।" बच्चे ने सोचा,
उसे पसन्द था सुन्दर-सुन्दर फूल बनाना
अपने नीले और गुलाबी और
नारंगी रंगोंवाले क्रेयॉन से।
पर टीचर ने कहा, "ठहरो"
"मैं बताती हूँ तुम्हें, बनाते हैं यह कैसे।"
और फूल था वह सुर्ख़, एक हरी टहनी से लगा।
"देखो, ऐसे" टीचर ने कहा
"अब तुम शुरू कर सकते हो।"

छोटे बच्चे ने देखा टीचर का फूल
फिर देखा उसने अपने फूल की तरफ़
टीचर के फूल से अधिक सुन्दर लगा उसे अपना फूल
पर उसने यह कहा नहीं।

बस अपना पन्ना पलट दिया उसने
और बनाया वैसा ही एक फूल जैसा था टीचर का।
सुर्ख़ था वह, एक हरी टहनी से लगा।

दूसरे दिन टीचर ने कहा :
"आज हम बनायेंगे कोई चीज़ चिकनी कच्ची मिट्टी से"
"बढ़िया।" बच्चे ने सोचा
पसन्द थी चिकनी कच्ची मिट्टी उसे।
तमाम तरह की चीज़ें बना सकता था वह चिकनी
कच्ची मिट्टी से,
साँप और बर्फ़वाले पुतले,
हाथी और चूहे, ट्रक और मोटरें
और वह गूँथने और टुकड़ों में तोड़ने लगा
अपनी चिकनी मिट्टी का गोला।

पर टीचर ने कहा, "ठहरो"
"अभी शुरू करने का वक़्त नहीं आया।"
और वह इन्तज़ार करती रही जबतक सभी तैयार नहीं दिखने लगे।
"अब शुरू करते हैं", टीचर बोली,
"हम तश्तरी बनायेंगे।"
"बढ़िया।" बच्चे ने सोचा,
"उसे पसन्द था तश्तरियाँ बनाना।"
और बनाने लगा वह तश्तरियाँ
हर रंग रूप की, हर डील-डौल की।

पर टीचर ने कहा, "ठहरो"
"मैं दिखाती हूँ तुम्हें बनाते हैं इसे कैसे।"
और दिखाया उसने सबको कैसे बनायी जाती है
एक गहरी तश्तरी।

"देखो ऐसे," टीचर बोली,
"अब तुम शुरू कर सकते हो।"
छोटे बच्चे ने देखी टीचर की तश्तरी,
फिर देखा उसने अपनी तश्तरी की तरफ़
टीचर की तश्तरी से अधिक सुन्दर लगी उसे अपनी तश्तरी

पर उसने यह कहा नहीं।
बस लपेट लिया एक गोले में फिर से अपनी
कच्ची चिकनी मिट्टी को
और बनायी वैसी ही तश्तरी जैसी थी
उसकी टीचर की।
एक गहरी तश्तरी थी वह।

और बहुत जल्द ही
सीख गया वह नन्हा बच्चा, इन्तज़ार करना,
और देखना
और चीज़ें बनाना हूबहू वैसी, जैसी होतीं टीचर की।
और बहुत जल्द ही
उसने चीज़ों को अपने ढंग से बनाना छोड़ दिया।

फिर हुआ ऐसा
कि वह छोटा बच्चा और उसका परिवार
चला गया रहने किसी और घर में,
किसी दूसरे शहर में,
और उस छोटे लड़के को
जाना पड़ा किसी दूसरे स्कूल में।

टीचर ने कहा
"आज हम एक चित्र बनायेंगे।"
"बढ़िया।" बच्चे ने सोचा।
और उसने इन्तज़ार किया टीचर के बताने का
कि वह बताये कि क्या करना है।
पर टीचर ने कुछ भी न कहा।
बस कमरे का चक्कर लगाने लगी।

जब वह छोटे बच्चे के पास पहुँची
उसने पूछा, "क्या तुम चित्र बनाना नहीं चाहते।"
"चाहता हूँ," बच्चे ने कहा।
"हम क्या बनायेंगे?"
"तुम बनाओ, तभी तो मुझे पता चलेगा",
टीचर ने कहा।

"कैसे बनाऊँ" बच्चे ने पूछा।
"क्यों, जैसे भी तुम चाहो," टीचर बोली।
"और किसी भी रंग से?", पूछा बच्चे ने
"किसी भी रंग से", बोली टीचर।
और बनाने लगा वह लड़का,
सुर्ख़ फूल जो था हरी टहनी से लगा।

अनुवाद : मीनाक्षी